गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

5-6 जनवरी 2022
मूल्य : 10.00 रूपये

पंजीयन क्रमांक : MPHIN36490
मासिक जागरण पत्रिका

"मैं स्वयं को हिन्दू कहने में गर्व का अनुभव करता हूँ"

- स्वामी विवेकानंद

आज़ादी का अमृत महोत्सव

देश का पम्प
शक्ति सोलर पम्प

SHAKTI
PUMPING LIFE

अन्नदाता की समृद्धि और खुशहाली के लिए शक्ति पम्पस् लाएं हैं विश्वस्तर की उच्चतम तकनीक से निर्मित पम्पस् की विशाल रेंज साथ ही सोलर पम्पस्, मोटर्स की विस्तृत श्रृंखला जिससे कृषि एवं सिंचाई संबंधित सारी जरूरतें पूरी होती हैं.

विशेषताएं

- 40% अधिक डिस्चार्ज
- शक्ति स्टेनलेस स्टील पम्पस् एवं मोटर्स उत्कृष्ट फेब्रिकेशन तकनीक द्वारा निर्मित
- डीलर्स एवं सर्विस सेंटर्स का विशाल नेटवर्क
- विश्व की आधुनिकतम मशीनें एवं रोबोट्स द्वारा उत्पादन
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर की मशीनों का उपयोग
- निरंतर नवीनीकरण के लिये योग्य एवं अनुभवी टीम
- 100% स्टेनलेस स्टील से निर्मित

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर – 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) – इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

जाग्रत मालवा
मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN36496
वर्ष : 01 अंक : 06
• • •
पौष– माघ
युगाब्द ५१२३

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
• • •
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी–1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731–3551341
• • •
Email :
jagrutmalwa@gmail.com
jagrutmalwa

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
विश्व संवाद केन्द्र
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित एवं मुद्रांकण ऑफसेट, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर द्वारा मुद्रित

अपनी बात

ॐ

हमारे समाज जीवन में अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय उत्सव आते हैं। हमारा राष्ट्र त्यौहारप्रधान है। किसी भी प्रसंग को त्यौहार में बदल लेना हम भारतीयों की विशेषता है।

मकर सक्रांति के दिन भगवान सूर्यनारायण मकर राशि में प्रवेश करते हैं तथा दक्षिणायन समाप्त होकर उत्तरायण का शुभांरभ होता है। यह दिन हम सबको अज्ञान रूपी अंधकार से प्रकाश रूपी ज्ञान की ओर, निराशा से आशा की ओर तथा अवगुणों को नाश कर सद्गुणों की ओर जाने की प्रेरणा देता है, छोटे-छोटे तिलों की तरह बिखरे समाज को गुड़ रूपी आत्मीयता से बांधकर संगठित करने का संदेश देता है। संक्राति का अर्थ है सही दिशा में क्रांति, अर्थात् समाज में ऐसी क्रांति लाना जो सभी प्रकार से शुभ तथा समाज जीवन को उन्नत करने वाली हो।

इसी माह स्वामी विवेकानंद का जन्मदिवस भी है। स्वामीजी ने भारतवासियों को अपने देश से प्रेम करना, उसे आदर देना और उसके लिए सर्वस्व समर्पण करना सिखाया। उन्हें पूरा विश्वास था कि विश्व को पश्चिम भौतिकता की अपेक्षा भारतीय आध्यात्मिकता की अधिक आवश्यकता है। उनके साहस और निष्ठा की शक्ति ने ही पश्चिम के लोगों को भारत और उसकी सभ्यता के प्रति प्रेम करने के लिए प्रेरित किया था। स्वामी जी ने कहा है -
'' भारत की बिखरी हुई आध्यात्मिक शक्तियों का एकत्रीकरण ही राष्ट्रीय एकता है। अतः राष्ट्र के रूप में भारत को उन सबका संगठन करना होगा जिनके हृदय की धड़कन एक आध्यात्मिक लय में स्पंदित होती है।''

''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' के नारे के उद्घोषक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जन्म दिवस का भी अवसर है। उनके अधूरे सपने को पूरा भी हमें करना है। गणतंत्र दिवस का पावन पर्व भी राष्ट्र के प्रति हमारे कर्तव्य भाव को जगाता है। स्वतंत्रता दिवस केअमृत महोत्सव वर्ष से पूरा देश सराबोर है, इस बार गणतंत्र दिवस पर इसकी अनुभूति सबको होगी।

इन सभी पुण्य प्रसंगों का स्मरण कर आइये हम अपने राष्ट्र को सम्यक क्रांति के साथ अखिल विश्व का सिरमौर बनाएं। भारत माता की जय।

करवट बदल रहा है देखो, भारत का इतिहास।
जाग उठा है हिन्दू-हृदय में, विश्व विजय विश्वास।

युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद

डॉ. सुब्रतो गुहा

कुछ लोग समय के सांचे में ढल जाते हैं -परन्तु कुछ तो समय के सांचे ही बदल देते हैं -और इतिहास द्वारा कालजयी महामानव के रूप में सदैव याद रखे जाते हैं। ऐसे ही एक इतिहास पुरुष का जन्म कोलकाता में दिनांक 12 जनवरी 1863 को हुआ, जिसका बाल्यकाल का नाम था नरेन्द्रनाथ दत्त। पिता विश्वनाथ दत्त प्रसिद्ध वकील थे जबकि माता भुवनेश्वरी देवी एक धर्मपरायण विदुषी नारी थीं जिन्होंने बालक नरेन्द्र को हिन्दू देवी देवताओं, धर्मग्रंथों से परिचित करवाते हुए आध्यात्मिक संस्कार उसके कोमल मन में डाले। इस संसार में कुछ लोगों को तलाश है दौलत की, कुछ को तलाश है शोहरत की परन्तु नरेन्द्र को तलाश थी ईश्वर की। युवा नरेन्द्र जब कोलकाता के स्कॉटिश चर्च कॉलेज के विद्यार्थी थे तब उन्होंने अपने शिक्षक विलियम हेस्टी से सुना कि कोलकाता के निकट दक्षिणेश्वर महाकाली मंदिर के **पुजारी रामकृष्ण परमहंस** को देवी महाकाली साक्षात् दर्शन देती हैं। जब यही बात नरेन्द्र ने अपने चचेरे भाई रामचंद्र दत्त से भी सुनी तो एक दिन जिज्ञासावश 18 वर्ष के युवा नरेंद्र ने दक्षिणेश्वर पहुंचकर रामकृष्ण परमहंस से भेंट की और उनके अध्यात्मिक विचारों एवं ओजस्वी वाणी से इतने प्रभावित हुए कि उसके बाद प्रति सप्ताह रामकृष्ण परमहंस से मिलने दक्षिणेश्वर की यात्रा करने लगे और शीघ्र ही उनके सबसे प्रिय शिष्य बन गये, जिनकी प्रेरणा से ही नरेन्द्र ने संन्यास ग्रहण किया और उन्हें एक नया नाम मिला स्वामी विवेकानंद।

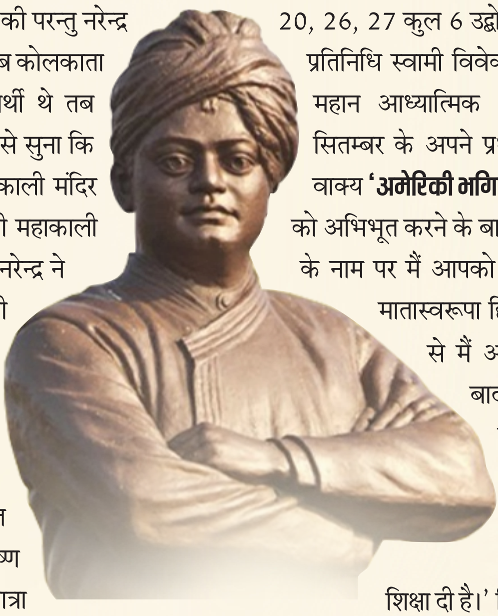

जिस पूज्य गुरु का हाथ पकड़कर नरेन्द्र से स्वामी विवेकानंद बनने का सफर पूर्ण किया उसी पूज्य गुरुदेव ने 16 अगस्त 1886 को इस पृथ्वी से विदाई बेला में अपने प्रिय शिष्य को अपनी समस्त अलौकिक आध्यात्मिक शक्तियां सौंप दी, जिसमें शामिल थी समाधि की सर्वोच्च अवस्था निर्विकल्प समाधि। अपने गुरु के आध्यात्मिक कार्यों को जारी रखने के उद्देश्य से गुरु के अन्य शिष्यों से मिलकर स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जिसकी आज समूचे विश्व में 208 शाखाएं सेवारत हैं। अपने सनातन राष्ट्र और राष्ट्रवासियों के सुख -दुःख को समझने के उद्देश्य से स्वामी विवेकानंद ने सन 1888 से 1892 तक समूचे भारत का भ्रमण किया तथा सन 1892 में तमिलनाडु प्रांत में कन्याकुमारी समुद्र तट पर एक दिन ध्यान अवस्था में उन्हें दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ और बाद में उसी स्थान पर विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण हुआ। दिनांक 11 सितम्बर से 27 सितम्बर 1893 तक अमेरिका के शिकागो शहर के सात हजार क्षमता वाले विशाल कोलंबस सभागृह में आयोजित विश्व धर्म संसद में उन्होंने सितम्बर 11, 15, 19, 20, 26, 27 कुल 6 उद्बोधनों के माध्यम से सनातन हिन्दू धर्म प्रतिनिधि स्वामी विवेकानंद ने पश्चिमी जगत को भारत की महान आध्यात्मिक धरोहर से परिचित करवाया। 11 सितम्बर के अपने प्रथम उद्बोधन के आत्मीयतापूर्ण प्रथम वाक्य **'अमेरिकी भगिनियों और भ्राताओं'** से उन्होंने श्रोताओं को अभिभूत करने के बाद कहा 'संसार के प्राचीनतम महर्षियों के नाम पर मैं आपको धन्यवाद देता हूँ तथा सब धर्मों की मातास्वरूपा हिन्दू धर्म व करोड़ों हिन्दुओं की ओर से मैं आपका अभिवादन करता हूँ।' इसके बाद हिन्दुत्व के महत्व को प्रतिपादित करते हुए स्वामीजी ने कहा 'मुझको हिन्दू धर्म का अनुयायी होने का गर्व है जिसने संसार को सहिष्णुता और सब धर्मों को मान्यता प्रदान करने की शिक्षा दी है।' विश्व धर्म संसद के समापन दिवस 27 सितम्बर 1893 को अपने उद्बोधन में धर्मान्तरण का तीव्र विरोध करते हुए स्वामीजी ने कहा **'ईसाई को हिन्दू या बौद्ध नहीं हो जाना चाहिए, और न हिन्दू अथवा बौद्ध को ईसाई ही।'** विश्व धर्म संसद में स्वामीजी के प्रभाव को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि अमेरिका एवं पश्चिमी देशों के सभी प्रमुख समाचार पत्रों ने अपने मुखपृष्ठ पर स्वामीजी का चित्र छापकर उन्हें विश्व धर्म संसद का सर्वश्रेष्ठ विद्वान वक्ता घोषित किया। तत्कालीन प्रमुख अमेरिकी समाचार पत्र **'न्यूयॉर्क हेराल्ड'** ने लिखा 'स्वामी विवेकानंद को सुनने के बाद हमें उनके महान देश भारत में मिशनरी भेजकर आध्यात्मिक प्रचार और धर्मांतरण की अपनी

सामाजिक समरसता का पर्व मकर सक्रांति

मकर संक्रांति का पौराणिक महत्व - मकर संक्रांति से अग्नि तत्व की शुरुआत होती है और कर्क संक्रांति से जल तत्व की। इस समय सूर्य उत्तरायण होता है अतः इस समय किये गए जप और दान का फल अनंत गुना होता है मकर संक्रान्ति के अवसर पर पवित्र नदी एवं नदी तट पर दान को अत्यन्त शुभ माना गया है। सामान्यतः सूर्य सभी राशियों को प्रभावित करते हैं, किन्तु कर्क व मकर राशियों में सूर्य का प्रवेश धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त फलदायक है। यह प्रवेश अथवा संक्रमण क्रिया छः-छः माह के अन्तराल पर होती है। भारत देश उत्तरी गोलार्ध में स्थित है। मकर संक्रान्ति से पहले सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में होता है अर्थात् भारत से अपेक्षाकृत अधिक दूर होता है। इसी कारण यहाँ पर रातें बड़ी एवं दिन छोटे होते हैं तथा सर्दी का मौसम होता है। किन्तु मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरी गोलार्ध की ओर आना शुरू हो जाता है। अतएव इस दिन से रातें छोटी एवं दिन बड़े होने लगते हैं तथा गरमी का मौसम शुरू हो जाता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक होगा तथा रात्रि छोटी होने से अन्धकार कम होगा। अतः मकर संक्रान्ति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है। प्रकाश अधिक होने से प्राणियों की चेतनता एवं कार्य शक्ति में वृद्धि होगी।

मकर संक्राति की पूजा विधि - भविष्यपुराण के अनुसार सूर्य के उत्तरायण के दिन संक्रांति व्रत करना चाहिए। पानी में तिल मिलाकार स्नान करना चाहिए। अगर संभव हो तो नदी स्नान करना चाहिए। इस दीन तीर्थ स्थान या पवित्र नदियों में स्नान करने का महत्व अधिक है। इसके बाद भगवान सूर्यदेव की पंचोपचार विधि से पूजा-अर्चना करनी चाहिए इसके बाद यथा सामर्थ्य नदी घाट अथवा घर मे ही पूर्वाभिमुख होकर यथा सामर्थ्य गायत्री मन्त्र अथवा सूर्य के मंत्रों का अधिक से अधिक जाप करना चाहिये।

सामाजिक समरसता का यह पर्व पूरे विश्व में अनूठा है, समाज का सम्पन्न सक्षम वर्ग अपने से कमतर वर्ग की चिंता कर उनको अपने साथ समरस कर यह उत्सव मनाता है। आदिकाल से ही इस पर्व पर दान देने की परम्परा रही है जिसका मूल कारण गुरूकुल के आचार्य वर्ग जो अपना सारा समय ज्ञानार्जन में ही व्यतीत कर देता था, उनको इस पर्व पर कुछ न कुछ देने की परम्परा रही है जिससे उनका जीवन यापन चलता रहे। कालांतर में समाज की व्यवस्था परिवर्तित होती गई और निम्न वर्ग को सहयोग कर अपने साथ समरस कर उसमें आत्मीय भाव जागृत करना प्रमुख हो गया है।

पृष्ठ क्रमांक 4 का शेष -

मूर्खता समझ में आ गयी है। हम उन्हें आध्यात्मिकता क्या सिखायेंगे, हमें तो उनसे आध्यात्मिकता सीखने की आवश्यकता है। संसार को हिन्दू धर्म की महिमा समझाने और हिंदुत्व की विजय पताका फहराने के साथ ही हिन्दू नर नारियों के मन में अपनी धर्म -संस्कृति के प्रति गर्व का भाव जाग्रत करने हेतु स्वामीजी ने यह नारा दिया **'गर्व से कहो हम हिन्दू हैं।'** इस नारे के 'हम' शब्द में हिन्दू धर्म की सभी जातियां शामिल हैं इसलिए इसमें सन्देश यह है कि सभी जातियों के हिन्दू समान हैं क्योंकि उनका धर्म एक है और जाति से भी पहले हमारी पहचान धर्म से ही जुड़ी है। अनेक स्वाधीनता संग्राम सेनानियों ने स्वीकार किया था कि स्वामी विवेकानंद के 'शक्ति सिद्धांत' से वे अत्यधिक प्रभावित हुए जिसमें कहा गया 'जीवन का सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक है शक्ति।' शक्ति संचय और शक्ति के उपयोग का यह सिद्धांत देशवासियों के सम्मुख रखते हुए स्वामीजी ने कहा था **'कमजोरी का उपचार कमजोरी पर चिंतन नहीं, बल्कि शक्ति का सतत चिंतन है।'** हिन्दू समाज को अपनी सनातन धर्म-संस्कृति से निरंतर जुड़े रहकर अपने पूर्वजों पर गर्व करने का सन्देश देते हुए स्वामीजी ने कहा था 'जब हम अपने पूर्वजों के बारे में ग्लानि का अनुभव करने लगें तो समझ लीजिये अंत निकट है।'

सकारात्मक विचारों को अपनाने की शिक्षा देते हुए स्वामीजी ने कहा **'उठो ,जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत।'** अपने इसी सिद्धांत का अनुसरण कर स्वामीजी हिन्दू समाज में जागरण के लक्ष्य प्राप्ति की ओर निरंतर सफलतापूर्वक बढ़ते रहे परन्तु ईश्वर ने अचानक 4 जुलाई 1902 को 39 वर्षीय युवा स्वामी विवेकानंद को अपने पास बुला लिया। इस वर्ष 12 जनवरी को अमर राष्ट्रसंत स्वामी विवेकानंद की 159 वीं जयंती की मंगल बेला में हम इन पंक्तियों द्वारा उनके प्रति श्रद्धा निवेदन करें

'आप तो चले गये हैं लेकिन , स्मृति शेष हृदय आँगन में ,
तुलसी क्यारे दीप जलाते, अंकित सूरत भोली आंखन में।

भारत के जन का मन और सुदृढ़ होता गणतंत्र

सुश्री प्रेरणा पाटिल

सच्चे अर्थों में गणतंत्र - गणतंत्र अर्थात् एक ऐसी व्यवस्था जहां राष्ट्र की सत्ता जनसाधारण में समाहित हो और जहां जनसाधारण मिलकर एक राष्ट्र का निर्माण एवं पुनर्निर्माण करते हों। विगत कुछ वर्षों में जन की भावनाओं को समझते हुए उन्हें सम्मान दिया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप भारत में गणतंत्र दिन-प्रतिदिन मजबूत होता दिखाई दे रहा है। जिस राष्ट्र में 'गण' का स्थान सर्वोपरि हो उस राष्ट्र की चहुंमुखी उन्नति सुनिश्चित होती है। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण का भूमिपूजन, सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार और अब काशी विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर के पहले चरण के विकास कार्यों का लोकार्पण जैसे ऐतिहासिक कदमों ने भारत में गणतंत्र को मजबूती प्रदान की है। मंदिरों का जीर्णोद्धार अथवा पुनःप्रतिष्ठा केवल धार्मिक महत्व का ही विषय नहीं हैं अपितु यह देश की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक है।

विदेशी आक्रमण, सहनशीलता और प्रतिकार - भारत की सांस्कृतिक धरोहरों को विदेशी आक्रांताओं ने अनेकों बार क्षतिग्रस्त किया लेकिन भारतीय जनमानस ने बार-बार अपनी धरोहरों को पुनः प्रतिष्ठापित किया। मंदिरों की पुनःप्रतिष्ठा से भारतीय जनमानस ने विश्वभर के घृणा और विद्वेष से पोषित संकीर्ण साम्प्रदायिक विचारों को सदा यह संदेश दिया है कि आप कुछ भी कर लीजिए हम कभी झुकेंगे नहीं। विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता और सबको स्वीकार करने वाली संस्कृति के रूप में हम पुनः-पुनः खड़े हो जायेंगे। हमारे देश की उसी कालजयी गणतांत्रिक परंपरा का निर्वहन करते हुए वर्तमान में भी हमारी सहनशीलता के परिचायक अनेकों आक्रमण झेल चुके मंदिरों को पुनः प्रतिष्ठापित करने का महान कार्य किया जा रहा है।

सोमनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार से जन चेतना का संचार - इस क्रम में सर्वप्रथम सोमनाथ मंदिर की बात करते हैं। विदेशी आतताइयों ने मात्र सोने का भंडार मान कर उसे कई बार लूटा, कई बार क्षतिग्रस्त किया गया। भारत का प्राचीनतम गौरवशाली मंदिर भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। देश के पहले गृहमंत्री और प्रखर संस्कृतिवादी लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारी विरोध के बाद भी सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार करवा कर भारतीयों के मन में एक चेतना का संचार किया था।

श्रीरामजन्मभूमि के भूमिपूजन से जनक्रांति - 9 नवंबर 2019 का दिन भारतीय इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज किया जायेगा, सभी भारतीयों के लिए इस दिन का विशेष महत्व है। इसी दिन हमारी पुरातन सभ्यता के प्रतीक मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम की अयोध्या स्थित जन्मभूमि पर विदेशी आक्रांता के विरुद्ध भारतीयों के 500 वर्ष के लंबे संघर्ष और दावे पर भारत की सबसे बड़ी अदालत ने अपनी मोहर लगा दी। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र न्यास द्वारा सरकारी धन की जगह जन सहयोग से मंदिर निर्माण का प्रस्ताव रखा तो विश्व के सभी भक्तों ने अपेक्षा से कई गुना ज्यादा राशि दी।

जनभावनाओं की अभिव्यक्ति बाबा विश्वनाथ कॉरिडोर - यह भी प्राचीन काल से भारतीयों की आस्था का केंद्र रहा। विदेशी-विधर्मी आक्रांता ने भग्न किया था। प्रधानमंत्री मोदी जी ने संसदीय क्षेत्र वाराणसी और विशेषकर कॉरिडोर का कायापलट कर भारतीयों की जनभावनाओं का सम्मान किया है। विश्वनाथ मंदिर केवल भारत ही नहीं अपितु विश्व की प्राचीनतम धरोहरों से एक है। सनातन संस्कृति में शिव से ही ब्रम्हांड की उत्पत्ति का सिद्धांत इसके माहात्म्य को और भी व्यापक बनाता है। प्राचीन काल में इसका जीर्णोद्धार इंदौर की शासिका शिवभक्त अहिल्या बाई ने करवाया था ओर वर्तमान में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने करवाया है। बाबा विश्वनाथ कॉरिडोर के विकास कार्यों में अभी और भी बहुत कुछ काम होना शेष है, जबकि अभी मात्र प्रथम चरण के कदमों का ही लोकार्पण किया गया है। इस कायाकल्प के पश्चात पुनः देशभर में एक स्वाभिमान से ओतप्रोत हर्ष का संचार हुआ है। एक बार पुनः भारतीय संस्कृति को पुनर्स्थापित करने का सकारात्मक प्रयास हुआ है जो वास्तव में भारतीय जन के मन का ही संकल्प है। यह संकल्प ही हमारे गणतंत्र को दृढ़ आधार प्रदान कर रहा है।

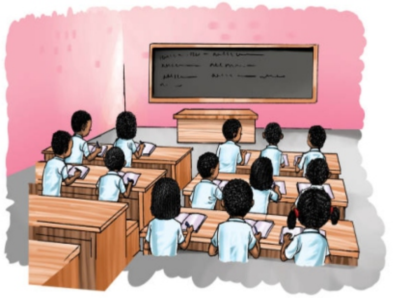

स्कूली बच्चों को पढ़ाया जा रहा गलत इतिहास

एक फिजिक्स के प्रोफेसर ने कक्षा 6 से 12 एनसीईआरटी की हिस्ट्री बुक्स के अध्ययन का निश्चय किया और उसने पाया कि लगभग 110 बातें ऐसी हैं जो संदिग्ध हैं। जैसे कक्षा 6, सामाजिक विज्ञान के पृष्ठ 46 पर ऋग्वेद के आधार पर भारत के बारे में लिखा है कि 'आर्यों द्वारा कुछ लड़ाइयां मवेशी और जलस्रोतों की प्राप्ति के लिए लड़ी जाती थीं। कुछ लड़ाइयां मनुष्यों को बंदी बनाकर बेचने खरीदने के लिए भी लड़ी जाती थीं।' स्पष्ट है कि किताब लिखने वाला यह साबित करना चाहता है कि भारत में भी गुलाम प्रथा थी और मनुष्यों को खरीदने बेचने की जो बातें बाइबल और कुरान में हैं वे कोई नई नहीं हैं, बल्कि वैसा ही अमानवीय व्यवहार भारत में भी होता था। ऐसे ही वे आगे लिखते हैं 'युद्ध में जीते गये धन का एक बड़ा हिस्सा सरदार और पुरोहित रख लेते थे, शेष जनता में बांट दिया जाता था।' यहां भी मुहम्मद के गजवों को जस्टिफाई करने की भूमिका बनाई गई है। आगे एक जगह लिखा है 'पुरोहित यज्ञ करते थे और अग्नि में घी, अन्न के साथ कभी कभी जानवरों की भी आहुति दी जाती थी।' आगे पृष्ठ 60 पर लिखा है 'खेती की कमरतोड़ मेहनत के लिए दास और दासी को उपयोग में लाया जाता था।' तब उस प्रोफेसर ने पहले तो स्वयं अध्ययन किया, मेगस्थनीज की इंडिका आदि के आधार पर यह सिद्ध हुआ कि ये सब मनगढ़ंत लिखा जा रहा है, उसने एनसीईआरटी में आरटीआई डाली कि इन बातों का आधार क्या है? आप हिस्ट्री लिख रहे हैं, रेफरेंस कहाँ हैं? ऋग्वेद की सम्बंधित ऋचाएं, अनुवाद बताया जाए और यदि नहीं है तो खंडन या सुधार किया जाए।

जानकर आश्चर्य होगा कि एनसीईआरटी ने सभी 110 प्रश्नों का एक ही जवाब दिया कि हमारे पास इसका कोई प्रूफ नहीं है। इसके अलावा जवाब टालने और लटकाने का रवैया रखा। कई वर्ष ऐसे ही बीत गए। हारकर वे पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट में गये कि एनसीईआरटी हमें इनका जवाब नहीं दे रही। कोर्ट ने पिटीशन स्वीकार कर लिया और एनसीईआरटी को जवाब देने के लिए कहा। तब एनसीईआरटी ने कहा कि हमारी सभी पुस्तकों का लेखन जेएनयू के हिस्ट्री के प्रोफेसर ने किया है और हमने उन्हें जवाब के लिए कह दिया है। लगभग एक वर्ष बाद जेएनयू के लेखकों ने जवाब दिया कि हमने इन बातों के लिए ऋग्वेद के अनुवाद का सहारा लिया है। ऋग्वेद में इंद्र को एक योद्धा बताया गया है और उसमें आये नरजित शब्द से यह साबित होता है कि वे लूटपाट करते थे और मनुष्यों को गुलाम बनाते थे। इस पर इस प्रोफेसर ने संस्कृत के जानकारों को वे मंत्र बताए कि क्या इनका यही अर्थ होता है जो जेएनयू के प्रोफेसर ने किया है? संस्कृत के विद्वानों ने एक स्वर में कहा कि जेएनयू वालों का अर्थ मनमाना, कहीं कहीं तो मूल कथ्य से बिल्कुल उलटा है। इस पर कोर्ट ने इन्हें पूछा कि क्या आप संस्कृत जानते हैं? आपने यह अनुवाद कहाँ से उठाया? तो जेएनयू के कथित इतिहासकारों ने कहा कि वे संस्कृत का स भी नहीं जानते, उन्होंने एक बहुत पुराने अंग्रेज लेखक के ऋग्वेद के अनुवाद का इस्तेमाल किया है।

कोर्ट – 'और जो आपने लिखा है कि लूट के माल को ब्राह्मण आदि आपस में बांट लेते थे, उसका आधार क्या है?'

जेएनयू - 'चूंकि ऋग्वेद में अग्नि का वर्णन है और अग्नि को पुरोहित कहा गया है तो इसका अर्थ यही है कि जो जो अग्नि को समर्पित किया जा रहा है मतलब पुरोहित आपस में बांट रहे हैं।'

अब जेएनयू और एनसीईआरटी के इन तर्कों पर माथा पीटने के सिवाय कोई चारा नहीं है और वे शायद यही चाहते हैं कि हम माथा पीटते रहें! एनसीईआरटी आगे कक्षा 11की हिस्ट्री में लिखती है 'गुलामी प्रथा यूरोप की एक सच्चाई थी और ईसा की चतुर्थ शताब्दी में जबकि रोमन साम्राज्य का राजधर्म भी ईसाई था, गुलामों के सुधार पर कुछ खास नहीं कर सका। यहां एनसीईआरटी के लिखने के तरीके से छात्र यह समझते होंगे कि ईसाई धर्म गुलामी के खिलाफ है। जबकि सच्चाई यह है कि एक चौथाई बाइबल इन्हीं बातों से भरी हुई है कि गुलाम कैसे बनाने, उनके साथ कितना यौन व्यवहार करना, उन्हें कब कब मार सकते हैं, वगैरह वगैरह। सच्चाई यह है कि एनसीईआरटी के 2006 के पाठ्यक्रम का एक मात्र उद्देश्य था हिन्दूधर्म को जबरदस्ती बदनाम करना, यानि जो नहीं है उसे भी हिंदुओं से जोड़कर प्रस्तुत करना और ईसाइयों की बुराइयों पर पर्दा डालकर भारत में उसके प्रचार के अनुकूल वातावरण बनाना। सोनिया गांधी की तत्कालीन मंडली ने पूरी साजिश कर उक्त पाठ्यक्रम की रचना की थी और आज विगत 16 वर्ष से वही पुस्तकें चल रही हैं, एक अक्षर तक नहीं बदला गया। **संकलन - श्रीमति संगीता सूरवाड़े**

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर - नवाँ इतिहास की ओर एक पग

श्री दुर्गेश साध, साहित्यकार

अपणा भारत की काशी (बनारस या वाराणसी) खऽ दुनिया में सबसी जूनो नगर होण को सौभाग्य मिल्योज। बारह ज्योतिर्लिंग मऽ सी एक काशी, जहाँ स्वयं बाबा विश्वनाथ राज करज। काशी नाँव का साथ अनायासज विश्वनाथ भगवान को नाँव अपणा मन सी जुड़ी जाएज, कारण कि ऐका बिना काशी अधूरी छे। काशी, हमारी आध्यात्मिक चेतना की प्रतीक छे। धार्मिक महत्व का साथज-साथ इनी नगरी को पैराणिक अरु सामाजिक महत्व बी छे।

हमारी संस्कृति पर आघात कई नवी वात नई हँई। हमारो देस कई सदी तक गुलाम रह्योज। पयलऽ, मुगल न नऽ अपणा ऊपर राज कर्यो, जेका पाछऽ अंग्रेजी हुकुमत आई। मुगल कथई बी जाता, वहाँ का मंदिर नऽ खऽ तोड़ी नाखता था। हमारा कई-कई मंदिर न खऽ रौंदी नऽ, उन्नऽ अपणी मस्जिद नऽ बणाई। कथई मस्जिद नई बी बणाई पाया, तो उनखऽ लुटणऽ को काम तो ऊ लोग करताज था। इना लुटेला धन खऽ ऊ लोग अपनी जमात या कौम का काम मऽ लगाउता था। काम कौन सो - हिन्दू न खऽ खतम करनुँ, इस्लाम खऽ फैलाउणऽ को! उनका लेण एका दुई फायदा था - एक तो हिन्दू नऽ का धार्मिक स्थल कम हुई जाता था, दुजो उनखऽ डराई क नऽ उनखऽ कन्वर्ट करनो आसान हुई जातो थो। देख्यो जाये, तो हमखऽ आजाद हुयेल बी 75 बरस होण खऽ आयाज, मगर काई हम वास्तव मऽ अबी बी स्वतंत्र कहलाई सकॉज? नई, कारण कि हम भौतिक रूप (शरीर सी) सी तो आजाद हुई चुक्या था, मगर वैचारिक रूप सी अबी बी हमारी सोच जूनीज छे। हम हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता, हमारी बोली, हमारी भाषा, हमारा राष्ट्र, हमारा समाज का प्रति आज बी लापरवाहज छे। सोचो, अपणाज देस मऽ भगवान राम को नॉव लेणुँ, माथा पर टीको लगाऊणुँ सांप्रदायिक छे, मगर जाळी वाळई टोपी पईरी न तकरीरी नारा लगाऊणुँ लोकतांत्रिक अरु भाईचारा को प्रतीक! इनी अवस्था मऽ हमखऽ कुणनऽ पटक्योज! हम खुदजऽ ऐका लेण जवाबदार छे।

आज मोदी जी नऽ काशी विश्वनाथ मऽ हिन्दू स्वाभिमान को जी शंख फूँक्योज, ऐकी गूँज एक लम्बा समय तक हमारा समाज मऽ वाजती रह्यगऽ।

अँवऽ वात करॉ कि काशी विश्वनाथ कॉरिडोर मऽ काई-काई काम हुयाज या होणुँज-

1. पयलऽ, असी मान्यता थी कि गंगा माता, बाबा विश्वनाथ खऽ छुई कऽ नऽ निकळती थी, मगर समय का साथ ई दुई नऽ मऽ दूरी नऽ आवती गई। ई दूरी खऽ पाटणऽ को काम करसे - ई कॉरिडोर। ईना प्लान मऽ गंगा सी दुई पाईपलाईन नऽ बिछायेल छे, जी सीधी मंदिर का गर्भगृह मऽ पहुँचसे। एक सी मंदिर मऽ पाणी आउसे, नऽ एक सी दूध अरु चढ़ायेल पाणी वापिस गंगा नदी मऽ जासे। अँवऽ माता गंगा, बाबा का सतत पॉय धवती रह्यगऽ।

2. ईनो कॉरिडोर 3 भाग मऽ बणेल छे। पयलऽ, मुख्य मंदिर को भाग, जेखऽ लाल पत्थर सी बणायेल छे। ऐका अलावा रस्ता मऽ संगमरमर का 22 शिलालेख बी लगायेल छे, जेमऽ काशी धाम की महिमा को वर्णन छे।

3. रस्ता मऽ वैदिक केन्द्र का अलावा म्यूजियम, वाराणसी गैलरी, मुमुक्षु भवन, जलपान गृह आदि की बी व्यवस्था कॉरिडोर मऽ करेल छे।

4. ईना कॉरिडोर की एक अरु विशेषता ई छे कि जी कई पत्थर बनाउणऽ मऽ इस्तमाल हुयाज, उनका ऊपर या तो वैदिक मंत्र लिखेल छे, या फिर स्त्रोत या संध्या-वंदन को विधान।

5. सन् 1669 मऽ इन्दौर इस्टेट की महारानी माता अहिल्याबाई होल्कर नऽ काशी विश्वनाथ मंदिर खऽ फिर सी बणाळ्यो थो। ऐका पछी सन् 2021 मऽ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का शासनकाल मऽ एको गौरव वापस देवाळण् मऽ योगदान कर्योज।

6. ईना कॉरिडोर बणनऽ सी ऐका सबई घाट नऽ की सुंदरता बढ़से। काशी का बारा मऽ ई कह्यो जायेज कि यहाँ पऽ जेकी मृत्यु होयज, ओखऽ सीधो मोक्ष मिलज। उत्तरक्रिया का लेण बी एक विशिष्ट जगा छे, ऐका लेण यहाँ पऽ साल भर जमघट लगेल रहेज। घणा साल सी ऐका घाट, पुनरुद्धार को रस्तो देखी रह्या था, अमऽ जाई न असो संयोग बण्योज। काशी तो सिर्फ एक झाँकी छे, अपणा हिन्दुत्व, अपणा स्वराज्य की फिर सी स्थापना करनऽ की; ऐका बाद असो लगज कि भारतीय स्वाभिमान अपणा पूर्ण स्वरूप मऽ पुनर्जाग्रत होयगऽ।

अपणी शक्ति

नारायणी माया बदेका, उज्जैन

जे जे राम सा। नारी, स्त्री,औरत,महिला नाम तो नरी तरे से लेवाय पन इकी शक्ति एकज है। अपणी शक्ति के पेचान करीके, उको पूरी तरिका से उपयोग करनो। सबसे बड़ी ताकत आपणे ज, जिको एक मजबूत नाम नारी शक्ति।

आज समाज में तरे तरे की प्रवृत्ति चली री है, इको यो मतलब नी के हम सब अपना फरज से हाथ झटकी ला ने, खाली अधिकार की ज बात करा। हर महिला को घर परिवार, समाज, राज्य ने देश का लिये विशेष योगदान होनो चयये। खाली आर्थिक मदद के दान से सब ठीक हुई जाय ऐसो भी नी है, हां उससे मध्यम वर्ग ने निम्न वर्ग में सहायता हुई जाय। पण सहायता ऐसी के कोई सवारथी ने दूसरा पे ज निरभर नी हुई जाय।

महिला होने के नाते हमारो सबसे बड़ो योगदान हमारे साथ की हमारे आसपास की, बगर पढ़ी लिखी महिला के साक्षर बनावा की पूरी कोसिस करनी। अपणी कलात्मक रूचि को उपयोग करीके उके समाज में लाणो, ने उके अपणो काम बनय के उससे पूंजी कमाणी ने अपणी जिनगी चलावा के साथे अपणा साथे की कमजोर पड़ती महिला होन को संबल बननो ने, उनके भी आत्मनिर्भर बनने की सीख देनी।

सरकार की मदद तो बखत बखत पे होय, पण हमारी खुद की अंदरूनी शक्ति हमारी पल पल मदद करे और या ऐसी मदद है कि इससे हम पूरी तरे जीवन का भोत सारा उतार चढ़ाव झेली सका,पूरा करी सका। विघन तो आय पण निराश नी होनो। हर महिला सृष्टि की रचना की कड़ी होय इसलिए खुद की रचनात्मक पेचाण जरुर राखनी। काठ की वस्तु बने की पीली माटी से घर सजावट को सामान। नवा जुना कपड़ा से बिछावा की चटय, सतरंजी बने के पग पूछवा का आसण। घर में दीवाली दसेरा पे माँडना बने के ब्याव में वपराता देवा लेवा का सामान जसे की कंकु की चंगेरणी, रूई की बाती की डबली। ऐसो कोय काम नी जो महिला करी नी सके। मेंदी मांडना, देवा लेवा का साड़ी कपड़ा की भोत सुंदर सजावट करी के और भी खबसूरत करी देनो। घर की छोटी छोटी क्यारी में फूल उगय के घर का आंगणा में साग भाजी आमला उगय के अपणी जरुरत की पूर्ति हुई सके। एकजुट हुई के यो काम और सरल हुई सके। अपणो बखत भी अच्छो निकले ने आर्थिक मदद भी मिले। हाँ केनो ने लिखनो भोत आसान है, पण हम महिला हिम्मत करा तो सब सम्भव हुई जाय। समाज के लिए हर महिला प्रेरणा बने। दबाव तो हर ओर से अय सके पण अपनी इच्छा शक्ति काठी राखणी। फिर से एक बात के अधिकार से जादा हमारो समाज ने देश के प्रति कर्तव्य भोत जरूरी है और नारी शक्ति का योगदान से घर परिवार, समाज देश को उत्थान जरुरी है। नारी है सृष्टि को आधार इका बिना सूनो जग संसार।

चित्र भारती शार्ट फिल्म फेस्टिवल 2022

बिसनखेड़ी स्थित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के नवीन परिसर में 18 से 20 फरवरी, 2022 तक आयोजित होने वाले चित्र भारती राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल के लिए भूमिपूजन किया गया।

इस दौरान आयोजन समिति के उपाध्यक्ष श्री लाजपत आहूजा, सामाजिक कार्यकर्ता श्री नरेन्द्र ठाकुर, भारतीय चित्र साधना की न्यासी सुश्री रंजना यादव एवं एमसीयू की कुलपति प्रो. केजी सुरेश ने विधि-विधान से भूमिपूजन सम्पन्न कराया।

गाय से जुड़ी कुछ रोचक जानकारी

1. गौ माता जिस जगह खड़ी रहकर आनंदपूर्वक चैन की सांस लेती है। वहां वास्तु दोष समाप्त हो जाते हैं।

2. जिस जगह गौ माता खुशी से रंभाने लगे उस जगह देवी देवता पुष्प वर्षा करते हैं।

3. गौ माता के गले में घंटी जरूर बाधें; गाय के गले में बंधी घंटी बजने से गौ आरती होती है।

4. जो व्यक्ति गौ माता की सेवा पूजा करता है उस पर आने वाली सभी प्रकार की विपदाओं को गौ माता हर लेती है।

5. गौ माता के खुर में नागदेवता का वास होता है। जहां गौ माता विचरण करती है उस जगह सांप बिच्छू नहीं आते।

6. गौ माता के गोबर में लक्ष्मी जी का वास होता है।

7. गौ माता कि एक आंख में सूर्य व दूसरी आंख में चन्द्र देव का वास होता है।

8. गौ माता के दूध में सुवर्ण तत्व पाया जाता है जो रोगों से लड़ने की क्षमता देता है।

9. गौ माता की पूंछ में हनुमानजी का वास होता है। किसी व्यक्ति को बुरी नजर हो जाये तो गौ माता की पूंछ से झाड़ा लगाने से नजर उतर जाती है।

10. गौ माता की पीठ पर एक उभरा हुआ कूबड़ होता है, उस कूबड़ में सूर्य केतु नाड़ी होती है। रोजाना सुबह आधा घंटा गौ माता की कूबड़ में हाथ फेरने से रोगों का नाश होता है।

11. एक गौ माता को चारा खिलाने से तैंतीस कोटि देवी देवताओं को भोग लग जाता है।

12. गौ माता के दूध घी मख्खन दही गोबर गोमूत्र से बने पंचगव्य हजारों रोगों की दवा हैं। इसके सेवन से असाध्य रोग मिट जाते हैं।

13. जिस व्यक्ति के भाग्य की रेखा सोई हुई हो तो वो व्यक्ति अपनी हथेली में गुड़ को रखकर गौ माता को जीभ से चटाये गौ माता की जीभ हथेली पर रखे गुड़ को चाटने से व्यक्ति की सोई हुई भाग्य रेखा खुल जाती है।

14. गौ माता के चारों चरणों के बीच से निकल कर परिक्रमा करने से इंसान भय मुक्त हो जाता है।

15. गौ माता के गर्भ से ही महान विद्वान धर्म रक्षक गौ कर्ण जी महाराज पैदा हुए थे।

16. गौ माता की सेवा के लिए ही इस धरा पर देवी देवताओं ने अवतार लिये हैं।

17. जब गौ माता बछड़े को जन्म देती तब पहला दूध बांझ स्त्री को पिलाने से उनका बांझपन मिट जाता है।

18. स्वस्थ गौ माता के गौ मूत्र को रोजाना दो तोला सात पट कपड़े में छानकर सेवन करने से सारे रोग मिट जाते हैं।

19. गौ माता वात्सल्य भरी निगाहों से जिसे भी देखती है उनके ऊपर गौकृपा हो जाती है।

20. काली गाय की पूजा करने से नौ ग्रह शांत रहते हैं। जो ध्यानपूर्वक धर्म के साथ गौ पूजन करता है उनको शत्रु दोषों से छुटकारा मिलता है।

21. गाय एक चलता फिरता मंदिर है। हमारे सनातन धर्म में तैंतीस कोटि देवी देवता है, हम रोजाना तैंतीस कोटि देवी देवताओं के मंदिर जा कर उनके दर्शन नहीं कर सकते पर गौ माता के दर्शन से सभी देवी देवताओं के दर्शन हो जाते हैं।

22. कोई भी शुभ कार्य अटका हुआ हो, बार बार प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं हो रहा हो तो गौ माता के कान में कहिये रूका हुआ काम बन जायेगा।

23. गौ माता सर्व सुखों की दातार है।

हे मां आप अनंत ! आपके गुण अनंत ! इतना मुझमें सामर्थ्य नहीं कि मैं आपके गुणों का बखान कर सकूं।

- संकलन श्रीमती रेखा घोलप

रंग लाई इतने महीने की मेहनत मालवा माटी में खिले केसर के फूल

कश्मीर की वादियों में उगने वाली केसर अब मालवा में भी उगाई जा रही है। इसको उगाने के लिए कई महीनों की मेहनत लगी है। बताया जा रहा है कि शिक्षा व पर्यावरणविद प्रो. एसएल गर्ग ने करीब 4 महीने इसके लिए मेहनत की है। जिसके बाद अब केसर के फूल निकल आए हैं।

जानकारी के मुताबिक, 7 दिसंबर को पहला फूल खिला। वहीं अब तक करीब 15 फूल खिल चुके हैं। प्रदेश में केसर की खेती को लेकर कई जगह प्रयोग किए गए। लेकिन अभी फूल खिलने का ये पहला मामला सामने आया है। बता दें, इंदौर से करीब 35 किलोमीटर दूर ग्राम जामली के केशर पर्वत पर प्रो. गर्ग केसर के साथ कई ऐसे पौधे लगाने में सफल रहे हैं, जिनके लिए मालवा की जलवायु अनुकुल नहीं मानी जाती थी। करीब 25 एकड़ की बंजर पहाड़ी को उन्होंने केशर पर्वत नाम देकर यहां हरियाली की चादर बिछाने के प्रयास शुरू किए। पथरीली जमीन और पानी की कमी होने के बावजूद उन्होंने असंभव को संभव कर दिखाया।

वैज्ञानिक तैयार कर रहे रंगीन आलू की प्रजाति

केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक रंगीन आलू की प्रजाति तैयार कर रहे हैं। इस प्रजाति के आलू में जिंक, कैटरिन और आयरन की मात्रा भरपूर होगी। यानी इस प्रजाति का आलू स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होगा। खासकर ऐसे लोगों के लिए जिन्हें जिंक और आयरन की पूर्ति के लिए अलग से दवाएं लेनी पड़ती हैं वे रंगीन आलू का सेवन कर इसकी पूर्ति कर सकते हैं। कोरोनाकाल में सबसे अधिक लोग जिंक की गोली खा रहे थे। आलू की रंगीन प्रजाति आने पर लोगों को आलू में ही जिंक मिल जाएगा।

स्वास्थ्य के लिए लाभदायक - रंगीन आलू की प्रजाति तैयार करने के लिए अनुसंधान केंद्र में शोध कार्य किया जा रहा है। इस प्रजाति के आलू में जिंक, कैटरिन और आयरन की मात्रा मिलेगी जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होगा। दो साल के अंदर रंगीन आलू की प्रजाति बीज तैयार हो जाएगा, जिसके बाद किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे।

- डॉ. एसपी सिंह केंद्र प्रमुख केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र

प्राकृतिक नत्रजन

गौ आधारित जहरमुक्त धान गेहूँ की फसल में जैविक नाइट्रोजन की पूर्ति देशी गौमाता के गौमूत्र से

1. 10 दिन की फसल में 1 लीटर/स्प्रेयर(15 लीटर पानी)
2. 20 दिन की फसल में 2 लीटर/स्प्रेयर
3. 30 दिन की फसल में 3 लीटर/स्प्रेयर
4. 40 दिन की फसल में 4 लीटर/स्प्रेयर
5. 50 दिन या उससे अधिक दिन की फसल में 5 लीटर/स्प्रेयर का छिड़काव करने से नाइट्रोजन की पूर्ति हो जाती है।

इसके उपयोग से होने वाले लाभ -

1. इससे जमीन सख्त हो चुकी है उसे मुलायम करता है।
2. जमीन में केंचुआ की मात्रा बढ़ाता है।
3. गोमूत्र छिड़कने के बाद पानी में बहकर नदी नाले में जाने से कोई प्रदूषण नहीं होता है जबकि केमिकल यूरिया डालने से जल प्रदूषित होता है।
4. छिड़कने में किसी प्रकार का त्वचा संबंधी रोग नहीं होता है।
5. इसके सुगंध या दुर्गंध से जंगली सूअर फसल को नुकसान नहीं करता।
6. जहर मुक्त अनाज का उत्पादन होता है जो इम्यूनिटी पावर को बढ़ाता है।

जायफल के 17 फायदे, जो आपने नहीं सुने होंगे...

रसोई का मसाला जायफल गुणकारी औषधि भी है। आयुर्वेद में जायफल को वात एवं कफ नाशक बताया गया है। आमाशय के लिए उत्तेजक होने से आमाशय में पाचक रस बढ़ता है, जिससे भूख लगती है। आंतों में पहुंचकर वहां से गैस हटाता है। ज्यादा मात्रा में यह मादक प्रभाव करता है। इसका प्रभाव मस्तिष्क पर कपूर के समान होता है, जिससे चक्कर आना, प्रलाप आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इससे कई बीमारियों में लाभ मिलता है तथा सौन्दर्य सम्बन्धी कई समस्याओं से भी निजात मिलती है।

जानिये कुछ और अद्भुत फायदे

1. सुबह-सुबह खाली पेट आधा चम्मच जायफल चाटने से गैस्ट्रिक, सर्दी खांसी की समस्या नहीं सताती है। पेट में दर्द होने पर चार से पांच बूंद जायफल का तेल चीनी के साथ लेने से आराम मिलता है।

2. सर में बहुत तेज दर्द हो रहा हो तो बस जायफल को पानी में घिस कर लगाएं।

3. सर्दी के मौसम के दुष्प्रभाव से बचने के लिए जायफल को थोड़ा सा खुरचिये, चुटकी भर कतरन को मुंह में रखकर चूसते रहिये। यह काम आप पूरे जाड़े भर एक या दो दिन के अंतराल पर करते रहिये। यह शरीर की स्वाभाविक गरमी की रक्षा करता है, इसलिए ठंड के मौसम में इसे जरूर प्रयोग करना चाहिए।

4. आपको किन्हीं कारणों से भूख न लग रही हो तो चुटकी भर जायफल की कतरन चूसिये इससे पाचक रसों की वृद्धि होगी और भूख बढ़ेगी, भोजन भी अच्छे तरीके से पचेगा।

5. दस्त आ रहे हों या पेट दर्द कर रहा हो तो जायफल को भून लीजिये और उसके चार हिस्से कर लीजिये एक हिस्सा मरीज को चूस कर खाने को कह दीजिये। सुबह शाम एक-एक हिस्सा खिलाएं।

6. फालिज का प्रकोप जिन अंगों पर हो उन अंगों पर जायफल को पानी में घिसकर रोज लेप करना चाहिए, दो माह तक ऐसा करने से अंगों में जान आ जाने की संभावना देखी गयी है।

7. प्रसव के बाद अगर कमर दर्द नहीं ख़त्म हो रहा है तो जायफल पानी में घिसकर कमर पे सुबह शाम लगाएं, एक सप्ताह में ही दर्द गायब हो जाएगा।

8. फटी एड़ियों के लिए इसे महीन पीसकर बीवाइयों में भर दीजिये तो 12-15 दिन में ही पैर भर जायेंगे।

9. जायफल के चूर्ण को शहद के साथ खाने से हृदय मज़बूत होता है। पेट भी ठीक रहता है।

10. अगर कान के पीछे कुछ ऐसी गांठ बन गयी हो जो छूने पर दर्द करती हो तो जायफल को पीस कर वहां लेप कीजिए जब तक गाठ ख़त्म न हो जाए, करते रहिये।

11.अगर हैजे के रोगी को बार-बार प्यास लग रही है, तो जायफल को पानी में घिसकर उसे पिला दीजिये। जी मिचलाने की बीमारी भी जायफल को थोड़ा सा घिस कर पानी में मिला कर पीने से नष्ट हो जाती है।

12. इसे थोड़ा सा घिसकर काजल की तरह आँख में लगाने से आँखों की ज्योति बढ़ जाती है और आँख की खुजली और धुंधलापन ख़त्म हो जाता है।

13. यह शक्ति भी बढाता है।

14. जायफल आवाज में सम्मोहन भी पैदा करता है।

15. जायफल और काली मिर्च और लाल चन्दन को बराबर मात्रा में लेकर पीसकर चेहरे पर लगाने से चेहरे की चमक बढ़ती है, मुहांसे ख़त्म होते हैं।

16. किसी को अगर बार-बार पेशाब जाना पड़ता है तो उसे जायफल और सफ़ेद मूसली 2-2 ग्राम की मात्र में मिलाकर पानी से निगलवा दीजिये, दिन में एक बार, खाली पेट, 10 दिन लगातार।

17. बच्चों को सर्दी-जुकाम हो जाए तो जायफल का चूर्ण और सोंठ का चूर्ण बराबर मात्रा में लीजिये फिर 3 चुटकी इस मिश्रण को गाय के घी में मिलाकर बच्चे को सुबह शाम चटायें।

नारी शिक्षा का पर्याय पूज्य सावित्री बाई फुले

▸ भवानी आर्य, पत्रकार

भारत वर्ष में ऐसी कई महान नारी शक्तियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने राजनीति, अर्थनीति, समाजशास्त्र व युद्ध के क्षेत्र में अपना साहस दिखाया जिसके कारण इतिहास के पृष्ठों पर वे देवी तुल्य महाशक्तियाँ अंकित हो गयीं। आज अपने समक्ष एक ऐसी ही राष्ट्रीय नायिका का जीवन परिचय रखने जा रहा हूं, जिनका इस वर्ष 190वा जन्म वर्ष है, जिन्हें भारत की प्रथम स्कूली महिला शिक्षिका होने का भी स्थान प्राप्त है। आपको ज्ञात हो ही गया होगा में किन महाशक्ति की बात कर रहा हूं, महाराष्ट्र की वीर प्रसूता भूमि पर जन्मी पूज्य सावित्री बाई फुले की।

पूज्य सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी सन 1831 में महाराष्ट्र के सतारा में हुआ। आपका मात्र 11 वर्ष की छोटी उम्र में ही ज्योतिबा फुले से विवाह हुआ, परन्तु वैवाहिक जीवन के साथ-साथ आपने समाज को भी दिशा देने का कार्य किया। ज्योतिबा फुले ने आपकी शिक्षा पूरी करवाई, शिक्षा के क्षेत्र में आपने कई ऐसे कार्य किये जो उस समय बड़े कठिन थे। जिसका एक उदाहरण सन् 1848 में दलित वर्ग की महिलाओं व बालिकाओं के लिए विद्यालय खोला जिसकी प्रथम शिक्षिका आप स्वयं बनीं और इतना ही नहीं कुछ समय के अंदर ही आपके द्वारा समाज के सहयोग से 12 विद्यालय और खोल दिये गए जो कि महिला सशक्तिकरण के लिए एक मजबूत कदम था।

विरोधों के बाद भी लक्ष्य पूरा किया - लम्बे समय से चली आ रही बाल विवाह, स्त्री शिक्षा का विरोध जैसी सामाजिक कुरीतियों से लड़ना बहुत कठिन था, परन्तु आपने हार न मानते हुए समाज में मौजूद इन कुरीतियों से लड़कर विद्यालय की स्थापना की व समाज सुधार का कार्य किया, बाहरी लोगों ने तो आपका विरोध किया ही, परन्तु घर के लोगों ने भी आपके इस मार्ग को गलत बताया, परन्तु आपके पति ज्योतिबा फुले ने आपका आत्मविश्वास बढ़ाया व हर समय आपका साथ दिया जिससे आपके आत्मविश्वास में कोई कमी नहीं आई और अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रही।

अविस्मरणीय नायिका - यह वर्ष स्वराज का 75वां अमृत महोत्सव है, यही अवसर है जब हम हमारे महान क्रांतिकारियों को याद कर उनसे राष्ट्र कार्य की प्रेरणा ले सकें। पूज्य सावित्री बाई फुले ने भी शिक्षा के क्षेत्र में जनचेतना जगाई व समाज को नई दिशा दी जिसके कारण लोगों में एकरूपता व समरसता का भाव पैदा हुआ। हम आज तक सिर्फ कुछ गिने चुने लोगों के ही बारे सुनते आए हैं कि उन्होंने हमें आजादी दिलाई, परन्तु सत्य इसके विपरीत है। भारत का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था, जहां से स्वतंत्रता के लिए रणभेरी न बजी हो ओर लोगो का नेतृत्व न किया हो। पूज्य सावित्री बाई फुले भी उन महान विभूतियों में से एक थी, जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से भारत माँ को विदेशी आक्रांताओं की गुलामी से मुक्त कराने के लिए अनेक प्रयास किये।

अंतिम समय - आपने कई समाज सुधारक कार्य किये आप बाल विवाह के विरोध में थी तथा आपने विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया। इतना ही नहीं उनके बच्चों के लिए बाल घर की स्थापना की जिससे समाज में समरसता का भाव जागरूक हो और लोगो में कुरीतियों की समाप्ति हो। 18 मार्च सन 1881 में आपका निधन हो गया, पुणे में 1883 में स्मारक बनाया गया, आपको सदैव समाज में जागरूकता, महिला सशक्तीकरण व समरसता के लिए जाना जाएगा।

असीरगढ़ का किला

श्रीकृष्ण के श्राप के कारण यहाँ आज भी भटकते हैं अश्वत्थामा, किले के शिवमन्दिर में करते हैं पूजा।

महाभारत के द्रोण पुत्र अश्वत्थामा के कारण प्रसिद्ध है असीरगढ़ किला। यहां स्थित शिवलिंग पर प्रतिदिन सुबह ताजा फूल चढ़ा मिलना अपने आप में एक रहस्य है। यहाँ के लोग यह मानते हैं कि भगवान कृष्ण के श्राप के कारण अपनी अमरता को विवशता और कष्टप्रद जीवन बिताने को मजबूर अश्वत्थामा यहाँ स्नान करने के बाद पास में स्थित शिव मन्दिर में पूजा करने जाते हैं। भगवान शिव का मन्दिर तालाब से थोड़ी दूर गुप्तेश्वर महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर के चारों ओर गहरी खाईयां हैं। इन खाइयों में से किसी एक खाई में से गुप्त रास्ता है, जो कि गुप्तेश्वर महादेव मन्दिर से जुड़ा है। कहा जाता है कि इस किले में महाभारत के अश्वत्थामा, आज भी यहाँ मौजूद है। अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने निकले अश्वत्थामा को उनकी एक चूक भारी पड़ी और भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें युगों- युगों तक भटकने का श्राप दे दिया। अश्वत्थामा लगभग पिछले पांच हजार सालों से यहीं भटक रहे हैं।

अश्वत्थामा कौन हैं ? अश्वत्थामा गुरु द्रोणाचार्य के पुत्र व कुरु वंश के राजगुरु कृपाचार्य के भानजे थे। द्रोणाचार्य ने ही कौरवों और पांडवों को शस्त्र विद्या सिखाई थी। महाभारत के युद्ध के समय गुरु द्रोण ने हस्तिनापुर राज्य के प्रति निष्ठा होने के कारण कौरवों का साथ देना उचित समझा। अश्वत्थामा भी अपने पिता की भांति शास्त्र व शस्त्र विद्या में निपुण थे। पिता-पुत्र की जोड़ी ने महाभारत के युद्ध के दौरान पांडवों की सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया था।

किले की रचना- इस किले के अंदर, भगवान शिव का मन्दिर और एक महल है। किला वास्तव में 3 भागों में बनाया गया है और प्रत्येक भाग का अपना एक नाम भी है; जैसे कि किले के पहले भाग को **'असिर्गगढ़'** कहा जाता है, दूसरे भाग को **'कमगरगढ़'** और त्रिभुज भाग (तीसरे भाग) को **'मलयगढ़'** कहा जाता है।

पुरातत्व विभाग को खुदाई में एक खूबसूरत महल मिला, जो शायद रानी के लिए बनवाया गया होगा। रानी महल में गुप्त 20 कमरों का पता चला है। पुरातत्व विभाग के अनुसार यह महल 100 बाय 100 की जगह में बना है। इस महल में एक स्नान कुण्ड भी है। खुदाई में एक जेल का भी पता चला है। जेल में लोहे की खिड़कियाँ दरवाजे और चार बैरक हैं। असीरगढ़ का किला, सतपुड़ा की पहाड़ियों पर स्थित है जो कि समुद्र तल से लगभग 250 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यह किला आज भी अपने वैभवशाली अतीत का बयान करता है। ऊंचे पहाड़ पर स्थित इस किले में एक जलाशय है, जो कितनी ही भीषण गर्मी हो, कभी सूखता नहीं है।

असीरगढ़ के नामकरण की कथा - इसके पीछे एक कथा के अनुसार यहाँ, आशा अहीर नाम का व्यक्ति रहता था, जिसके पास हजारों पशु थे। कहा जाता है कि उन पशुओं की सुरक्षा के लिए आशा अहीर ने ईंट गारा - मिट्टी व चूना-पत्थरों का इस्तेमाल कर दीवारें बनाई थी। इसी वजह से, अहीर के नाम पर इस किले को असीरगढ़ नाम दिया गया। इस किले पर कई सम्राटों का शासन रहा है। यहाँ कई समय तक चौहान वंश के राजाओं ने भी राज किया है। असीरगढ़ किला मध्य प्रदेश के बुरहानपुर से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। 20 किमी का यह छोटा सफर आप स्थानीय परिवहन साधनों की मदद से पूरा कर सकते हैं। बुरहानपुर का सबसे नजदीकी हवाई अड्डा इंदौर इंटरनेशनल एयरपोर्ट है। रेल मार्ग के लिए आप बुरहानपुर रेलवे स्टेशन का सहारा ले सकते हैं।

-संकलन श्री विट्ठलराव मोतीराम

गूगल विद्यादान कर रहा, गुरुओं का सम्मान नदारद

देहरी, आंगन, धूप नदारद। ताल, तलैया, कूप नदारद।
घूँघट वाला रूप नदारद। डलिया, चलनी, सूप नदारद।।
आया दौर फ्लैट कल्चर का, देहरी, आंगन, धूप नदारद।
हर छत पर पानी की टंकी, ताल, तलैया, कूप नदारद।।
लाज-शरम चंपत आंखों से, घूँघट वाला रूप नदारद।
पैकिंग वाले चावल, दालें, डलिया,चलनी, सूप नदारद।।
बढ़ीं गाड़ियां, जगह कम पड़ी, सड़कों के फुटपाथ नदारद।
लोग हुए मतलब परस्त सब, मदद करें वे हाथ नदारद।।
मोबाइल पर चैटिंग चालू, यार-दोस्त का साथ नदारद।
बाथरूम, शौचालय घर में, कुआं, पोखरा, ताल नदारद।।
हरियाली का दर्शन दुर्लभ, कोयलिया की कूक नदारद।
घर-घर जले गैस के चूल्हे, चिमनी वाली फूंक नदारद।।
मिक्सी, लोहे की अलमारी, सिलबट्टा, संदूक नदारद।
मोबाइल सबके हाथों में, विरह, मिलन की हूक नदारद।।
बाग-बगीचे खेत बन गए, जामुन, बरगद, पेड़ नदारद।
सेब, संतरा, चीकू बिकते गूलर, पाकड़, पेड़ नदारद।।
ट्रैक्टर से हो रही जुताई, जोत-जात में मेड़ नदारद।
रेडीमेड बिक रहा ब्लैंकेट, पालों के घर भेड़ नदारद।।
लोग बढ़ गए, बढ़ा अतिक्रमण, जुगनू, जंगल, झाड़ नदारद।
कमरे बिजली से रोशन हैं, ताखा, दियना, टांड़ नदारद।।
चावल पकने लगा कुकर में, बटलोई का मांड़ नदारद।
कौन चबाए चना-चबेना, भड़भूंजे का भाड़ नदारद।।
पक्के ईंटों वाले घर हैं, छप्पर और खपरैल नदारद।
ट्रैक्टर से हो रही जुताई, दरवाजे से बैल नदारद।।
बिछे खड़ंजे गली-गली में, धूल धूसरित गैल नदारद।
चारे में भी मिला केमिकल, गोबर से गुबरैल नदारद।।
शर्ट-पैंट का फैशन आया, धोती और लंगोट नदारद।
खुले-खुले परिधान आ गए, बंद गले का कोट नदारद।।
आँचल और दुपट्टे गायब, घूंघट वाली ओट नदारद।
महंगाई का वह आलम है, एक-पांच के नोट नदारद।।
लोकतंत्र अब भीड़तंत्र है, जनता की पहचान नदारद।
कुर्सी पाना राजनीति है, नेता से ईमान नदारद।।
गूगल विद्यादान कर रहा, गुरुओं का सम्मान नदारद।।

गुस्से की दवा

एक गृहस्थ नारी थी। जिसे बात-बात पर गुस्सा आ जाता था। उसकी इस आदत से पूरा परिवार परेशान था। उसकी वजह से परिवार में कलह का माहौल बना रहता था। एक दिन उस महिला के दरवाजे पर एक साधु आया। महिला ने साधु को अपनी समस्या बताई। उसने कहा, महाराज! मुझे बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है। मैं चाहकर भी अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पाती। कोई उपाय बताइए। साधु ने अपने झोले से एक दवा की शीशी निकालकर उसे दी और बताया कि जब भी गुस्सा आए, इसमें से चार बूंद दवा अपनी जीभ पर डाल लेना। 10 मिनट तक दवा को मुंह में ही रखना है। 10 मिनट तक मुंह नहीं खोलना है, नहीं तो दवा असर नहीं करेगी। महिला ने साधु के बताए अनुसार दवा का प्रयोग शुरू किया। सात दिन में ही उसकी गुस्सा करने की आदत छूट गई। सात दिन बाद वह साधु फिर से उसके दरवाजे आया तो महिला उसके पैरों में गिर पड़ी। उसने कहा, महाराज! आपकी दवा से मेरा क्रोध गायब हो गया। अब मुझे गुस्सा नहीं आता और मेरे परिवार में शांति का वातावरण रहता है। तब साधु महाराज ने उसे बताया कि वह कोई दवा नहीं थी। उस शीशी में केवल पानी भरा था। गुस्से का इलाज केवल चुप रहकर ही किया जा सकता है। क्योंकि गुस्से में व्यक्ति उल्टा सीधा बोलता है, जिससे विवाद बढ़ता है। क्रोध का इलाज केवल मौन है।

देश के पहले सीडीएस को श्रद्धा सुमन अर्पित

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के अलावा यदि किसी एक अधिकारी से भारत के आंतरिक और बाहरी दुश्मन सबसे अधिक डरते थे, वो थे जनरल विपिन रावत।

मोदी सरकार ने 2016 में जब उन्हें आर्मी चीफ बनाने की घोषणा की थी, तब कांग्रेस आदि पार्टियों ने पुरजोर विरोध किया था। और आर्मी चीफ बनने के बाद जनरल रावत ने सिद्ध कर दिया कि देश के गद्दार क्यों उनके खिलाफ थे। उन्होंने कश्मीर में आतंकवाद की कमर तोड़कर रख दी। ऐसे टारगेट ऑपरेशन चलाये कि जिहादी संगठनों को अपने लिये कमांडर ढूंढने मुश्किल हो गए। जो भी कमांडर बनता, उसका एनकाउंटर करके उसे 72 हूरों के पास भेज दिया जाता। धारा 370 इतनी आसानी और सफलतापूर्वक हटा दी गई, इसके लिए धरातल जनरल रावत ने ही तैयार किया था।

कारगिल युद्ध के बाद से ही तीनों सेनाओं के बीच समन्वय के लिए चीफ ऑफ डीफेन्स स्टॉफ (सीडीएस) पद बनाने की माँग उठ रही थी लेकिन अटलजी की सरकार चुनाव हार गई, और 2004 में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद उस प्रस्ताव को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। मोदीजी ने जब लाल किले की प्राचीर से सीडीएस पद के गठन की घोषणा की तो सबकी नजर इस बात पर थी कि पहला सीडीएस कौन बनेगा। जब सरकार ने जनरल रावत को सीडीएस बनाया तब एक बार फिर गद्दारों ने इस फैसले का विरोध किया। सीडीएस बनते ही जनरल रावत दिनरात काम करने में जुट गए। मोदीजी ने उन्हें इन्टीग्रेटेड थियेटर कमांड बनाने की जिम्मेदारी सौंपी।

यूएस और रशिया आदि शक्तिशाली देशों में इंटीग्रेटेड थिएटर कमांड पहले से ही है। इस कमांड का काम होता है युद्ध के समय तीनों सेनाओं के सभी संसाधनों का एक साथ पूरी क्षमता से प्रयोग करना। इस तरह की कमांड न होने के कारण कारगिल युद्ध के समय भारत को भारी नुकसान झेलना पड़ा था। यूएस जैसे विकसित देश को ये थिएटर कमांड बनाने में 20 से अधिक वर्ष लगे थे लेकिन जनरल रावत चाहते थे कि अगले मात्र 2-3 वर्षों में ही वो भारतीय सेनाओं की इंटीग्रेटेड थिएटर कमांड बना दें, और इसी के लिए वो जी-तोड़ मेहनत कर रहे थे। जनरल रावत के सीडीएस बनते ही तीनों सेनाओं का कायापलट होना शुरू हो गया। सीडीएस स्वयं रक्षा मंत्रालय का हिस्सा होते हैं इसलिए नौकरशाहों की बिना लेटलतीफी के सेनाओं के लिए धड़ाधड़ हथियार खरीदने शुरू हो गए। वर्षों से अटकी हुई डीफेंस डील भी पूरी होने लगीं। जनरल रावत का नाम सदैव स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।

वनवासी बच्चों के जीवन में प्रकाश लाने वाले प्रकाशजी नहीं रहे

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम जो वनवासी बच्चों के शिक्षा, संस्कार और स्वावलंबन के लिए जाना जाता है, सूदूर जंगलों में रहने वाले और प्रकृति के समीप अपना जीवन बिताने वाले वनवासी समाज को आधुनिक समाज में प्रचलित शिक्षा और नित नई वैज्ञानिक जानकारियां देकर उन्हें सक्षम बनाना उनके बच्चों को आधुनिक समाज के साथ सामजस्य बनाकर जीवन में आगे बढ़ाना आदि कार्यों के लिए अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा देने वाला संगठन है।

इस संगठन के अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख श्री प्रकाश त्र्यंबक काळे जी का शनिवार दि. 25 दिसंबर को सुबह 5 बजे के आसपास स्वर्गवास हुआ। वह 60 वर्ष के थे। पिछले लगभग डेढ़ महीने से प्रकाश जी कैंसर के साथ जूझ रहे थे। मूलतः नागपुर के रहने वाले प्रकाश जी का जन्म 5 फरवरी 1961 को हुआ था। बचपन से ही वे स्वयंसेवक थे। एमकॉम तक पढ़ाई करने के बाद 1983 में प्रचारक रूप में उन्होंने काम प्रारंभ किया। 1999 को उन पर कल्याण आश्रम का दायित्व आया और विभिन्न पदों पर रहते हुए अंत तक अपना जीवन वनवासी कल्याण आश्रम को समर्पित कर दिया। वनवासी कल्याण आश्रम के लिए भव्य दिव्य योजना बनाकर उनको प्रत्यक्ष में लाना प्रकाश जी की विशेषता थी।

हिंदू धर्म छोड़ चुके लोगों की घर वापसी कराएंगे

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि जो हिंदू धर्म को छोड़ चुके हैं और दूसरे धर्म में परिवर्तित हो चुके हैं उनकी घर वापसी होनी चाहिए। चित्रकूट में चल रहे तीन दिवसीय हिन्दू एकता महाकुंभ में संघ प्रमुख मोहन भागवत ने यह बात कही। उन्होंने हिन्दू धर्म छोड़ने वालों की घर वापसी का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि भय ज्यादा दिन तक बांध नहीं सकता है, अहंकार से एकता टूटती है। हम लोगों को जोड़ने के लिए काम करेंगे। महाकुंभ में शामिल हो रहे लोगों को उन्होंने इसका संकल्प भी दिलाया।

आरएसएस प्रमुख ने शपथ दिलाते हुए कहा, ''मैं हिन्दू संस्कृति के धर्मयोद्धा मर्यादा पुरूषोत्तम प्रभु श्री राम की संकल्प स्थली पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर को साक्षी मानकर संकल्प लेता हूं कि **''मैं अपने पवित्र हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू समाज के संरक्षण, संवर्धन और सुरक्षा के लिए आजीवन कार्य करूंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि किसी भी हिन्दू भाई को हिन्दू धर्म से विमुख नहीं होने दूंगा। जो भाई धर्म छोड़ कर चले गए हैं, उनकी भी घर वापसी के लिए कार्य करूंगा। उन्हें परिवार का हिस्सा बनाऊंगा।''** इसके अलावा उन्होंने देव और राक्षसों के बीच हुए द्वंद्व का किस्सा भी सुनाया। उन्होंने कहा कि किसी भी पार्टी को राज्य की सत्ता देव के रास्ते पर चलने से ही मिलेगी। बिना किसी पार्टी का नाम लिए उन्होंने कई कटाक्ष किए।

अली अकबर बने हिन्दू रामसिम्हन

मलयालम फिल्मों के प्रसिद्ध निर्देशक/कलाकार अली अकबर ने छोड़ा 'इस्लाम' और बन गये 'रामसिम्हन'

दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुप्रसिद्ध निर्देशक अली अकबर ने जनरल बिपिन रावत के निधन पर मुसलमानों के व्यवहार से व्यथित होकर अपने पूरे परिवार के साथ हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया । उन्होंने नाम भी परिवर्तित कर रामसिम्हन कर लिया है। सीडीएस बिपिन रावत के साथ हुई दुर्घटना के बाद अली अकबर ने फेसबुक पर एक वीडियो लाइव किया था। लेकिन फेसबुक ने उसे नस्लीय बताकर उनके अकाउंट को एक महीने के लिए सस्पेंड कर दिया। जाहिर है कि उसकी खूब कंप्लेंट की गई होगी। इसके बाद अली अकबर ने दूसरा फेसबुक अकाउंट बनाया और उसके जरिए लाइव आकर इस्लाम छोड़ने की घोषणा कर दी।

फेसबुक पर लाइव वीडियो में उन्होंने कहा - 'यह एक्सेप्ट करने योग्य नहीं है। इसलिए मैं यह मजहब छोड़ रहा हूँ। अब न मेरा और न ही मेरे परिवार का कोई और रिलीजन है। मानो मैं उस धारण वस्त्र के टुकड़े को उतार फेंक रहा हूँ, जिनके साथ मैं पैदा हुआ था।

इस्लाम छोड़ हिन्दू बने वसीम रिजवी

डासना मंदिर में यति नरसिंहानंद ने कराई घर वापसी

इस्लाम को लेकर अपनी बेबाक राय रखने वाले वसीम रिजवी अक्सर कट्टरपंथियों के निशाने पर रहते हैं। शिया वक्फ बोर्ड के पूर्व चेयरमेन हिंदू बन गए हैं।

वसीम रिजवी ने कुरान की आयतों को हटाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दी थी। शिव शक्ति धाम के महंत नरसिंहानंद गिरि महाराज ने गाजियाबाद के डासना देवी मंदिर में वसीम रिजवी को सनातन धर्म ग्रहण करवाया। वसीम रिजवी ने अपनी वसीयत में लिखा था कि उन्हें इस्लाम के अनुसार दफ्नाने की बजाय हिंदू धर्म के रीति रिवाजों के अनुसार अंतिम संस्कार किया जाए।

कुरान की 26 आयतों को हटाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दी थी। जिसका मुस्लिमों ने जमकर विरोध किया वसीम रिजवी की किताब को लेकर भी देश में काफी विवाद हुआ था। वसीम रिजवी के हिंदू बनने पर बड़ी संख्या में हिंदू धर्मगुरुओं ने उनका स्वागत किया है।

बदनावर में कचरे से बनने लगा प्लास्टिक दाना

डोर टू डोर कचरे से निकलने वाली प्लास्टिक की रिसाईक्लिंग कर मशीनों से प्लास्टिक के दाने व गट्टे बनाए जा रहे हैं। यह प्रयास नगर परिषद के स्वच्छता के प्रति जागरूकता का ही नतीजा है।

सीएमओ ने बताया कि नगर परिषद में 15 वार्डों से निकलने वाले कचरे में आने वाली प्लास्टिक को इकट्ठा कर इसे अलग किया जाता है, उसके बाद उसे मशीनों के माध्यम से साफकर अलग कर दिया जाता है। उसके बाद प्लास्टिक व पॉलिथिन को मशीनों के माध्यम से रिसाइक्लिंग कर प्लास्टिक दाने व गट्टे बनाये जा रहे हैं। कर्मचारियों द्वारा ट्रेंचिंग ग्राउंड पर मशीनें लगाई गईं, यहां प्रोसेसिंग शुरू कर प्लास्टिक दाने व गट्टे बनाना शुरू कर दिया गया है। निकाय के द्वारा पूर्व में लाखों रूपए की मशीनों को खरीद कर रख दिया गया। अनुपयोगी जैसी होने लगी मशीनों को कर्मचारियों व टेक्नीशियन की मदद से चालू किया गया। कुछ दिन ट्रॉयल के बाद हम इसमें सफल हुए। पीथमपुर नगर पालिका के बाद जिले में पहली नगर परिषद है, जहां कचरे से प्लास्टिक दाने बनाये जा रहे हैं। कचरे से बनाये जाने वाले प्लास्टिक दाने को प्लास्टिक की वस्तुओं के बनाने में आवश्यकता होती है, जिसके चलते उक्त कच्चे माल को कम्पनियां खरीद लेती हैं। प्लास्टिक के पाइप, बर्तन, बाल्टी व अनेक वस्तुओं में इसका उपयोग होता है, इसकी बिक्री से नगर परिषद को आमदनी होगी।

झाबुआ का क्रिसमस मेला हुआ निरस्त

कन्वर्जन करने वाली विधर्मी ताकतें कुचक्र रचाकर क्रिसमस के समय मेला लगाकर अपने नापाक इरादों को अंजाम देती थी; वनवासी बधुओं के जागने के कारण यह मेला निरस्त हो गया। 25 दिसंबर को क्रिसमस होता है और इस दिन जो भारत का त्यौहार नहीं है इस त्यौहार को भारत में मनाकर कन्वर्जन का कुचक्र रचा जाता है, इसलिए जनजाति क्षेत्रों में जहाँ कन्वर्जन के चान्सेस सबसे अधिक हैं वहीं क्रिसमस के नाम पर मेले लगाए जाते हैं। इसकी आड़ में जो होता है उसके लिए सेवन सिस्टर्स राज्यों की स्थिति देख लीजिये। जनजातीय क्षेत्रों में सबसे अधिक ऐसे आयोजन होते हैं, इसलिए लम्बे समय से अपने झाबुआ में भी क्रिसमस मेला लगाने की परम्परा कुछ षड्यंत्रकारियों ने शुरू की लेकिन झाबुआ का सामान्य जन जाग गया है वो कह रहा है भैया झाबुआ में भगोरिया मेला लगना चाहिए, क्रिसमस मेला नहीं। यह भी सामूहिक स्वर में स्पष्ट कहा कि झाबुआ में मेला के नाम पर कन्वर्जन का खेला नहीं चलेगा।

भारत रत्न डा.भीमराव रामजी आम्बेडकर (बाबा साहब) के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में अधिवक्ता परिषद जिला न्यायालय ईकाई इन्दौर के प्रयासों से आज एम. वाय. हास्पिटल इन्दौर में श्री हरिश्चन्द्र गुप्ता संचालक इन्दौर ऑटो एजेंसी के द्वारा 4 नेबुलाइजेशन मशीने में भेंट की गई।

एक और खबर खरगोन की हैं, और शानदार है एक पिता ने अपने बेटे के स्कूल में पत्र लिखा और कहा कि मेरे बेटों को शिवाजी, राणा प्रताप, राम, कृष्ण, रामायण, महाभारत के पात्र बनाइये ताकि उसका जीवन राष्ट्र के काम आये, उसे चार साहिबजादों के बलिदान के बारे में बताना। ऐसे ही कुछ युवाओं ने शार्ट फिल्म बनाई है उसमें भी शानदार संदेश दिया है, ऐसे हजारों हजार उदाहरण सामने आ रहे हैं। संदेश स्पष्ट है जो सबको पता है और ये हजारों हजार सकारात्मक परिवर्तन सामान्य लोगों के छोटे-छोटे प्रयासों से हो रहे हैं। ये प्रयास आज की जरूरत हैं, होते रहना चाहिए और उन्हें समर्थन भी मिलते रहना चाहिए।

कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय
किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, मध्य प्रदेश शासन
e कृषियंत्रअनुदान
व कस्टम हायरिंग के लिए उपलब्ध

IS 9020:2002
ISI
Safety only
CM/L-3159254

भारतीय किसानों की सेवा में... से 1988

कृषि दर्शन®
खेत खलियान का राजा

मिनी कम्बाईन टोकरी थ्रेशर
Basket Multicrop Thresher

आटोफिडिंग थ्रेशर
Autofeding Multicrop Thresher

डबल डॉलर
मल्टी क्रॉप थ्रेशर
Dollar Multicrop Thresher

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

टोकटी हडम्बा
Tokti Hadamba

बंधन हमारा
धरती के साथ...

हडम्बा कटर थ्रेशर
Hadamba Multicrop Cutter Thresher

सुदर्शन इंडस्ट्रीज
विक्रम नगर मौलाना, बड़नगर, जिला उज्जैन 456771 म.प्र.
Webite : Krishidarshan.com E-mail : Krishidarshan@ymail.com
Phone : 09826381825, 09826781825
इन्दौर ऑफिस : 30/3, साजन नगर, नेमावर रोड, नवलखा चौराहा
Mob.: 98270-39888

स्मरणीय विभूतियाँ

सतेन्द्र नाथ बोस
सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक
जयंती : १ जनवरी

गुरु गोविंद सिंह
सिख पंथ-दशम् गुरु
जयंती : २ जनवरी

सावित्री बाई फुले
समाज सुधारिका
जयंती : ३ जनवरी

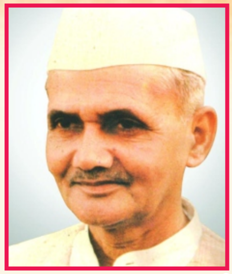

भारतरत्न लाल बहादुर शास्त्री
पूर्व प्रधानमंत्री
पुण्य तिथि : ११ जनवरी

स्वामी विवेकानन्द
विश्व विजयी संन्यासी
जयंती : १२ जनवरी

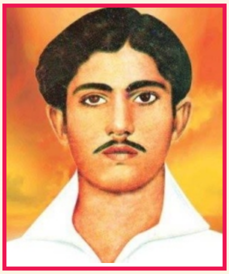

वीर हेमू कालाणी
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
बलिदान दिवस : २१ जनवरी

स्वामी समर्थ रामदास
राष्ट्र संत
पुण्यतिथि : २२ जनवरी

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस
स्वतंत्रता संग्राम के नायक
जयंती : २३ जनवरी

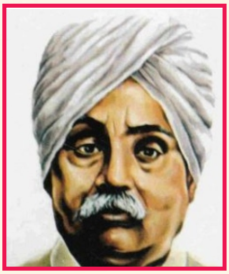

लाला लाजपतराय
स्वतंत्रता संग्राम के नायक
जयंती : २८ जनवरी

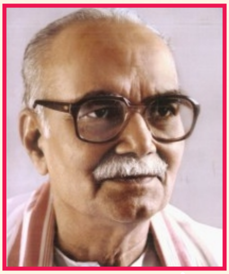

प्रो. राजेन्द्र सिंह(रज्जू भैया)
चतुर्थ सरसंघचालक
जयंती : २९ जनवरी

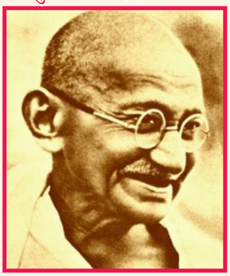

महात्मा गांधी
राष्ट्रपिता
पुण्यतिथि : ३० जनवरी

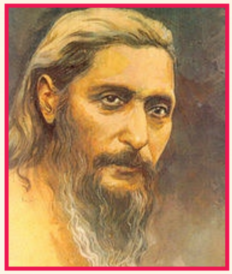

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
श्रेष्ठ कवि
जयंती : ३० जनवरी

फरवरी माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०२ चन्द्रदर्शन, गुप्त नवरात्रारंभ
ता. ०४ तिल कुंद, विनायकी चतुर्थी
ता. ०५ बसंत पंचमी, सरस्वती जयंती
ता. ०८ माँ नर्मदा जन्मोत्सव, भीष्माष्टमी
ता. १० महानंदा नवमी, नवरात्र पारणा
ता. १४ प्रदोष व्रत
ता. २० गणेश चतुर्थी व्रत
ता. २६ विजया एकादशी

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

जाग्रत मालवा (मासिक जागरण पत्रिका), स्वामी, प्रकाशक और मुद्रक विश्व संवाद केन्द्र
72, नारायण बाग, इन्दौर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रांकण ऑफसेट, पोलोग्राउन्ड इन्दौर से मुद्रित